# "शांति का घोषणा–पत्र"

1. हमारी आध्यात्मिकता की जड़े अति प्राचीन काल से, हम जो धार्मिक मित्र–मंडली (Quakers) के हैं , हमने झगड़ो से निपटने के लिये अहिंसात्मक साधनों को अपना कर शान्ति प्राप्त करना चुन लिया है । हम प्रत्येक व्यक्ति में परमेश्वर का दर्शन पाते है ।

2. हम विश्वास करते है कि प्रत्येक झगड़ा (संघर्ष) अंहिसात्मक रूप से सुलझाया जा सकता है जबकि हम अपनी रचनात्मक शक्तियों एवं साधनों को शान्तिमय निराकरण की खोज के लिये अपने नियंत्रण में करते है । हमें अपनी आराधना के अनुभव के आधार पर मालूम है कि बहुत अधिक विभाजित मसले भी आसानी से सुलझाये जा सकते है जब हम दिव्य (पवित्र) मार्ग दर्शन को ध्यान से सुनते है । मौन (शान्ति पूर्ण वातावरण) में, हमारे समक्ष नवीन मार्ग खुलते हैं जो इसके पूर्व कभी भी दृष्टव्य न हो सके हों ।

3. हमारे कोई भी शत्रु नहीं हैं । हमारा विश्वास है कि प्रत्येक व्यक्ति में रूपान्तरण की शक्ति है । शान्ति की स्थापना करने में अपने आप को खतरे में डालना (निबंधन करना), अपने भय पर विजय प्राप्त करना और सीमा पार करना है । "युद्ध का आतंक" के घोषित युग में एवं तथाकथित "हक की लड़ाई", हम युद्ध के साथ नहीं है ।

4. अहिंसा एक सक्रिय क्रम है, जो कि विरोधी पक्ष से एक बातचीत का रूप, अन्यायी प्राधिकार के विरूद्ध गृह–युद्ध या न्यायिक तरीके के माध्यम से धैर्यपूर्वक कार्य ले सकता है । अहिंसात्मक तरीकों से प्राथमिक हस्तक्षेप की आवश्यकता है जो बहुत प्रभावशाली होना चाहिए । अंध–विश्वास एवं कट्टरपंथी, आर्थिक असमानता, स्त्रोत या साधन पर एकाधिकार तथा अन्याय को मुक्त युद्धक स्थिति में पहुंचने के पहले जड़ से उखाड़ फेंकना चाहिए । संघर्ष के पश्चात पुनः अच्छा ढांचा बनाने तथा संबंधों को नया सुधार देने एवं भविष्य में संघर्ष को रोकने के लिये विशेष सावधानी बरतनी चाहिए ।

5. अहिंसा थोड़े से प्रयास में ही हमेशा न्याय नहीं प्राप्त करती । जैसा कि युद्ध में, मासूम लोग प्रताड़ित हो सकते है । तौ भी जब अहिंसात्मक तरीके बहुत सफल होते है, वे अक्सर बिना ध्यान आकर्षित किये टल जाते है क्योंकि संघर्ष टाल दिया जाता है । उदाहरण के लिये हम कभी नहीं जान पायेंगे, यदि चुपचाप से, आफ्रिकन ग्रेट लेक का अध्यवसायी हठीलेपन का (आग्रही) कार्य .......जिसने दुष्कर्मी एवं उत्तर जीवी दोनों को एक साथ दर्जनों ट्राउमा और चंगा करने के वर्कशाप में एक साथ लाया...... वास्तव में रवान्डा और बुरून्डी में फिर से हिंसात्मक शुरूवात को रोका । हम जानते है कि इस कारण अनेकों व्यक्तियों का रूपान्तरण हुआ ।

6. आधुनिक युद्ध में निर्दोष व्यक्ति दंड का दुख भोगते है जो "आसपास क्षतिग्रस्त" होने वाले माने जाते है – यह विध्वंस उस निर्माण–स्थल (ढांचे) पर होता है जिस पर नागरिक (जनसंख्या) निर्भर करते हैं ; यह वातावरण को विषैला बनाता है, भूमि को कूड़ा कर्कट बनाता है, यूरेनियम को खाली कर देता है तथा दूसरे संकटों में डालता है जो बहुत लंबे समय तक उस युद्ध–भूमि पर विद्यमान रहता है जब तक कि वह कृषि भूमि में नहीं पलटता । इसके अतिरिक्त युद्ध लोगों को हत्यारा बनने का प्रशिक्षण देता है, यह उन लोगों पर मनोवैज्ञानिक चिन्ह् छोड़ता है जिन्होंने इसको भोगा है और जिन्होंने इसका दंड पाया है । यह मौलिक रूप से उनका विश्वास तोड़ता है तथा रिश्तों में कभी न सुधरने वाली दरार पैदा करता है ।

7. युद्ध के लिये कानून द्वारा उन्मूलन करने की वकालत मूर्खता मालूम पड़ सकती है या स्वप्नदृष्टा (काल्पनिक) लग सकती है। हमारे पूर्वज जिन्होंने गुलामी की प्रथा को समाप्त करने का प्रयास किया था उनके प्रयासों के लिये उनका मज़ाक उड़ाया गया था । फिर भी वे सफल हुए, पहले हमारे खुद के समाज में समाप्त करने के लिये, और फिर दूसरों के साथ अपने देश में और फिर विश्व में समाप्त किया । ठीक उसी प्रकार, हम अपने जीवनों के प्रत्येक पहलू से हिंसा को जड़ से उखाड़ने के लिये वचन–बद्ध है : हमारे पारिवारिक संबंधों मे, हमारे समाज द्वारा अपराध के लिये प्रतिउत्तर में, हमारा पृथ्वी पर भंडारीपन में और हमारी विदेश–नीति में । हमारा लक्ष्य है परमेश्वर का शान्तिपूर्ण राज्य यहां, अभी पृथ्वी पर कायम करना ।

**सेंट लुईस मंथली मीटिंग**
**रिलीजियस सोसायटी ऑफ फ्रेंड्स** (Quakers)
**सेंट लुईस, मिसौरी, यू.एस.ए.**
**फरवरी 12, 2006**